सौराष्ट विश्वविद्यालय, राजकोट के ५०वें दीक्षान्त समारोह में दिनांक १९ दिसंबर, २०१५ को गुजरात के माननीय राज्यपाल श्री ओ० पी० कोहली जी के दीक्षान्त प्रवचन के संकलित अंश।

- सौराष्ट विश्वविद्यालय के ५०वें दीक्षान्त समारोह में मुझे दीक्षान्त प्रवचन का अवसर प्राप्त हुआ, इसकी मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है।
- भारत के पश्चिमाचल मे सौराष्ट प्रदेश अपनी विशिष्ट भौगोलिक, एतिहासिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान बनाये हुए है। सौराष्ट का केन्द्रिय महानगर राजकोट महात्मा गाधो की कर्मभूमि के रूप में ख्यात है। राजकोट के हृदयमच पर स्थित राष्टोय शाला के परिसर की धूल बापू के चरण–चिहनो से पावन बनी हुई है। जब भी कोई राष्ट–पुरूष राष्टोय शाला में पदार्पण करता है, वह उस धूलि को अपने मस्तक पर चढ+ाकर कृतकृत्यता का अनुभव करता है। जब भी मै राजकोट नगर मे प्रवेश करता हू, तब मुझे अपने आप में नवचेतना का सचार होने की अनुभूति होती है।
- मै सभी पदवीग्रहण करने वाले छात्र एव छात्राओ को बहुत–बहुत बधाई एव शुभकामनाए देता हू।
- दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् अब आपको अपने भरोसे जीना है। अब आपको अपना रास्ता स्वयं बनाना है। कोई बना–बनाया रास्ता आपको कही नही पहुचा सकता। जो व्यक्ति पहला कदम उठाने में हिचकिचाता है, वह कही अपना रास्ता नहीं बना सकता। रास्ता बन जाता है तो मजिल को पाना सहज सभव हो जाता है। इसीलिए प्रबल आत्मविश्वास और भरपूर साहस के साथ आगे कदम रखनेवाले व्यक्ति अपना गन्तव्य स्थल पर अवश्य पहुच सकते है। आप सभी छात्रागण मे अपार शक्तिया और अनत सभवनाए निहित है। आवश्यकता इस बात की है कि आप उन्हे पहचाने और साकार एव सिद्ध करने का पुरूषार्थ करे। अब तक आपने अपने जीवन को बुलदीयो पर पहुचानेवाले शिक्षा–मत्रों को आत्मसात् किया है। अब उन्हे आजमाने का समय आ गया है।
- आज तक आपने भी यही शिक्षा पाई है। अब कदम उठाईये, उड+ान भरीये और पहच जाये जहा आप पहुचना चाहे। आप सभी दीक्षार्थियो का जीवनमार्ग प्रशस्त हो और आप सुखी–सपन्न और मानवीय अस्मिता से स्पदित जीवन जी सके तथा अपने समाज को राष्ट को समुन्नत करते हुए विश्व मानवता को चरितार्थ करे, यही मेरी ओर से दीक्षा ह। इस दीक्षान्त प्रवचन के क्रम मे कुलाधिपति के रूप में शिक्षा और विश्वविद्यालय से सबधित कुछ विचार रखना चाहता हू। विश्वविद्यालय तो अध्ययन–अध्यापन, ज्ञान एवं शोधकार्य का तीर्थ है। इसलिए उसके आयाम वैश्विक होने चाहिए। हमारे पूर्वजों ने 'वसुधव कुटुम्बकम्' का बोध कराया है। जबकि सारा विश्व हमारा कुटुम्ब है, तब ज्ञान के उद्गम स्त्रोत के रूप मे विश्वविद्यालय की अवधारणा परिसीमित कैसे हो सकती है ?
- वस्तुत: विश्वविद्यालय एक यज्ञ शाला है, जहा छात्र और अध्यापक दोनों एक साथ ही ज्ञानयज्ञ करते है। वे अपने सकल्प, परिश्रम और समय की आहुति देते हैं। हम सब का परम कर्तव्य है कि यह यज्ञ निर्विदन चलता रहे। समाज अब भी चाहता है कि उसके शिक्षक इस मूल्यहास के युग में निश्चित नियमों, आदर्शो और नैतिक मूल्यो का अनुपालन करे। शिक्षक हमारे राष्टोय मूल्यो के उन्नायक है, लेकिन शिक्षक भी मानव प्राणी है उसकी अपनी समस्या भी है। इस उपभोक्तावादी युग मे शिक्षा भी उपयोगी वस्तु बन गई है। अब प्रश्न यह है कि शिक्षा को व्यवसायी उपयोगीकरण से कैसे बचाया जाए ? इस व्यवसाय में श्रेष्ठ प्रतिभाओं को कैसे आकर्षित किया जाये। हमारा अनुभव हमे बताता है कि केवल अच्छे वेतनमान भी पर्याप्त नहीं है। हमारा सामाजिक दृष्टिकोण भी बदलना चाहिए। हमारे सामाजिक विचारको, छात्रों, अभिभावको और राजनीतिक नेताओ को साथ मिलकर सामाजिक परिवर्तन और विकास की दिशाओ को प्रशस्त करना होगा।
- अध्यापक का जीवन, रहन–सहन अर्थात् संस्कृति उत्तम कोटि की होनी चाहिए। समाज के सास्कृतिक पथ से अध्यापक का गहरा सबध होना चाहिए। शिक्षालय ही समाज के सास्कृतिक कार्यो का क्षेत्र है। अतएव नवीन शिक्षा के दृष्टिकोण से अध्यापक की प्रतिभा सर्वत्तोमुखी होनी चाहिए। सफल अध्यापक ही राष्ट की वह शक्ति है, जिसके द्वारा राष्ट निर्माण, रक्षा और उन्नति सभव है। अध्यापको का सुयोग्य होना ही किसी देश की समृद्धि और उन्नति का मूलाधार है।
- सौराष्ट विश्वविद्यालय अतर्राष्टोय विश्वविद्यालय का दर्जा हासिल करने की दिशा में प्रशस्य पुरूषार्थ कर रहा है। देश के कुल ३०० विश्वविद्यालयो मे से श्रेष्ठतम ३० विश्वविद्यालयो मे २८ वें स्थान पर बिराजमान होने का गौरव यह विश्वविद्यालय प्राप्त कर सका है। यह गौरव की बात है।
- अत मे, मैं एक बार फिर सभी पदवीधारक छात्र एवं छात्राओं को बधाई देता हू और आशा करता हू कि आप सभी समाज और राष्ट के सेवा मे अपना अहम् दायित्व का निर्वहन करेगे। आप सभी का आगे का मार्ग सफलताओ से भरापूरा हो, एसी हृदयपूर्वक कामना करता हू।

धन्यवाद। जयहिन्द।